डेविड हार्डीमैन : जीवन-चित्रण एवं प्रमुख कृतियाँ

[DAVID HARDIMAN : LIFE-SKETCH AND MAIN WORKS]

लीक से हटकर कुछ अलग करने वालों में हार्डीमैन का नाम प्रमुख है। उनका सामाजिक वैज्ञानिक लेखन अधीनस्थ या दलितोद्धार अध्ययन (Subaltern studies) के नाम से जाना जाता है। हार्डीमैन का जन्म पाकिस्तान के रॉवलपिण्डी शहर में 1947 ई० में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा इंग्लैण्ड में पूरी हुई तथा उन्होंने 1970 ई० में इतिहास विषय में लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स से बी० ए० की डिग्री प्राप्त की। इतिहासकार के रूप में उनका विशेष अध्ययन आधुनिक भारत का

इतिहास है। उन्होंने सूरत के सेन्टर फॉर सोशल स्टडीस (Centre for Social Studies) में शोधकर्ता के रूप में 1980 ई० में कार्य किया। हार्डीमैन ने कई पुरस्कार और सम्मान अर्जित किए।

हार्डीमैन के लेखन का प्रमुख उद्देश्य निचले स्तर के दीन-हीन, दबे-कुचले एवं अधीनस्थ लोगों की चेतना को प्रकाशमय करना है। हार्डीमैन ने गुजरात प्रदेश के खेड़ा जिले के 1917-34 ई० के बीच के राष्ट्रीय आन्दोलन में कृषकों की भूमिका का सूक्ष्म अध्ययन किया है। उनका अध्ययन विशेष रूप से 'गुट', 'गुटबाजी' और 'दलित चेतना' से सम्बन्धित है। इसी अध्ययन से उन्होंने भारत में गुटबन्दी या दलबन्दी राजनीति का भी गहराई से विशलेषण किया है। हार्डीमैन का मत था कि गुट की अवधारणा उपनिवेशी शासकों की देन है जो भारत पर अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते थे। वे मानते हैं कि गुट के स्थान पर वर्ग की अवधारणा अधिक व्यापक और प्रभावशाली है और इसी के आधार पर भारत की राजनीति का भी विश्लेषण किया जा सकता है। हार्डीमैन ने ग्रामीण समुदायों के गुटों के अतिरिक्त आदिवासियों के सुधार आन्दोलनों का भी अध्ययन किया है। आदिवासियों के सुधार से सम्बन्धित अपने अध्ययन में उन्होंने सर्वप्रथम श्रीनिवास की संस्कृतिकरण तथा एनथनी वेलेस की पुनर्जीवन की अवधारणाओं का परीक्षण एवं उनकी सीमाओं को अंकित किया। इन अध्ययनों की व्याख्या में हार्डीमैन ने ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक परिप्रेक्ष्य का प्रयोग किया तथा मूल्य अवस्था को शक्ति सम्बन्धों के साथ जोड़कर इनकी विवेचना की है। उन्होंने अपने अध्ययन *Feeding the Bania* में गुजरात के बनियों के अधीन पलने वाले आदिवासियों का अध्ययन किया है। उन्होंने इस पहलू की ओर इंगित किया है कि सूदखोर बनिया जरूरत के समय आदिवासी किसानों को पैसे के रूप में कर्ज प्रदान करता है ताकि उसे पूर्ण जीवन ब्याज के रूप में प्रतिफल मिलता रहे। यह कर्ज और ब्याज का क्रम पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहता है। हार्डीमैन को भूस्वामियों द्वारा खेतीहर मजदूरों का शोषण असहनीय था। वे राजनेताओं और प्रशासकों से सम्पर्क कर दलितों को राहत देने की अपील करते हैं।

हार्डीमैन की प्रमुख कृतियाँ निम्नांकित हैं—

(1) *Peasants Nationalists of Gujarat (1981)*;

(2) *The Coming of the Devi : Advaṣi Assertion in Western India (1987)*;

(3) *Peasant Resistance in India (edited, 1994)*;

(4) *Subaltern Studies VIII : Essays in Honour of Ranajit Guha (edited, 1994)*;

(5) *Feeding the Bania : Peasants and Usurers in Western India (1996)*; तथा

(6) *Dialogues with Truth : Gandhi and his Legacy (2002)*।